-:ॐ:-

संस्कृत (कक्षा-VII)

प्रथमः पाठः

॥सुभाषितानि॥

श्लोक - पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।
मूढ़ैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥1॥

अर्थ - पानी, अन्न और सुभाषित पृथ्वी पर ये ही रत्न हैं, परन्तु मूर्खों के द्वारा पत्थर के टुकड़ों को रत्न कहा जाता है।

श्लोक- सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥2॥

अर्थ - सत्य के द्वारा पृथ्वी धारण की जा रही है - सत्य से सूर्य तप रहा है और सत्य के द्वारा ही हवा बह रही है। सत्य में सब कुछ समाहित है।

श्लोक- दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये ।
विस्मयो न हि कर्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा ॥3॥

अर्थ - दान, तपस्या, वीरता, विज्ञान, विनय और नीति के विषय में हैरान नहीं होना चाहिए, क्योंकि पृथ्वी बहुत प्रकार के रत्नों से भरी है।

श्लोक- सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम् ।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत् ॥4॥

Scanned by TapScanner

अर्थ - मनुष्य को सज्जनों के साथ ही बैठना चाहिए, सज्जनों के साथ ही संगति करनी चाहिए, सज्जनों के साथ ही झगड़ा और मित्रता करनी चाहिए, असज्जनों के साथ तो कोई भी व्यवहार नहीं करना चाहिए।

श्लोक - धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्॥5॥

अर्थ - धन और अनाज को खर्च करने में, विद्या की कमाई करने में, भोजन और आपसी व्यवहार में संकोच का त्याग करने वाला सुखी होता है।

श्लोक - क्षमावशीकृतिर्लोके क्षमया किं न साध्यते।
शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः॥6॥

अर्थ - संसार में क्षमा दूसरों को वश में कर लेती है। ऐसा कौन-सा कार्य है जो क्षमा से नहीं हो सकता। जिसके हाथ में शान्ति रूपी तलवार है, दुर्जन उसका क्या बिगाड़ सकता है?

— o —

AMAN SIR SANSKRIT

Scanned by TapScanner